उपसंहार

"माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता के यात्रा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर शोधकार्य करने के बाद निष्कर्ष रूप में जो तथ्य सामने आए हैं उनका निचोड़ यहाँ प्रस्तुत है- यात्रावृत्तांत साहित्यिक यात्री के यात्रानुभवों की संवेदनात्मक एवं कलात्मक प्रस्तुति है, जिसमें विश्वसंस्कृति की पूर्णता, मानव-जीवन की समग्रता एवं प्राकृतिक जीवन की विशालता का चित्रण होता है। नयी जगहों को देखने और अपने सामाजिक दायरे को विकसित करने तथा लोगों से संपर्क स्थापित करने की मनुष्य के सहज स्वाभाविक प्रकृति में यात्रा पहले से निहित है। ऐसे अनेक यात्री हुए जिन्होंने बहुत सारे देशों को ढूंढा, वे करने कुछ और निकले थे लेकिन किसी और देश में पहुंच गये। उनकी यात्राएं साहस की यात्राएं कहीं जाती थी। बहुत सारे ऐसे घुमक्कड़ हैं, जिन्होंने पैदल चलकर यात्रा को अंजाम दिया। उस समय एक देश से दूसरे देश चलकर आधी दुनिया घूम ली। इसी के चलते कलात्मकता और संवेदना के साथ यात्रा साहित्य को अभिव्यक्ति मिलती गयी।

जब एक देश से दूसरे देश में सफर करने की बात आती है, तब ज्ञात होता है की, जो यायावर एक समाज से दूसरे समाज की सांस्कृतिक परंपरा को जानते हुए गुजरे थे इसमें ह्वेनसांग, मार्को पोलो प्रमुख थे। समाज को जानने, समझने, नवीन परिवेश से दुनिया को अवगत कराने में इनका बड़ा योगदान रहा। साथ ही देश की बात करें तो उस समय यह देश बहुत बड़ा था। जब शंकराचार्य ने चारों मठों की स्थापना की होगी, तब उस समय यह कार्य इतना आसान नहीं रहा होगा, क्योंकि तत्कालीन समय में यातायात के उत्तम-व्यवस्थित साधन उपलब्ध नहीं थे जो वर्तमान में उपलब्ध है। यानी देश के चारों कोनों में मठों की स्थापना शंकराचार्य ने पैदल चलकर ही की थी। इससे एक नई सांस्कृतिक चेतना का जन्म हुआ। हमारे यहां संतों की परंपरा रही है, संत यात्राएं करते रहते थे। इस कड़ी में कबीर, वल्लभाचार्य, विट्ठलनाथ जैसे महान संतों ने पूरे देश की यात्रा पैदल चलकर की। इन सभी संतों के पदचिह्नों पर चलकर ही वर्तमान यात्रा साहित्य की नींव रखी गई है। यायावरों ने अपने अनुभवों को कलात्मकता और संवेदना के साथ अभिव्यक्त किया, जिससे यात्रा-साहित्य समृद्ध हुआ। यात्रावृत्तांत के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियाँ एक-दूसरे के संपर्क में आईं, जिससे अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना और प्रेम की भावना को बल मिला।

हिंदी में यात्रावृत्तांत का प्रारंभ उन्नीसवीं शताब्दी से हुआ। प्रारंभिक कृतियों में विशेष रूप से प्रकृति के सौन्दर्य और विविध दृश्यों का ही चित्रण मिलता है। रचनाकारों ने नदियों, पर्वतों, वनों, पशु-पक्षियों आदि

का इस तरह वर्णन किया कि, पाठक स्वयं को उस स्थान पर उपस्थित अनुभव करता है। यह प्रकृति चित्रण ही यात्रा साहित्य की मूल आत्मा बना रहा, जिससे यह विधा वर्णनात्मक साहित्य के रूप में उभरती चली गई। लेकिन यात्रा साहित्य केवल दृश्य-वर्णन तक सीमित नहीं रहा। समय के साथ समाज में विषमताएँ, विडम्बनाएँ और आधुनिक जीवन की जटिलताएँ बढ़ीं, तो इस सामाजिक बदलाव ने यायावर लेखकों के मन को विचलित किया। उन्होंने यात्रा के बहाने समाज की विसंगतियों, संत्रास और घुटन भरे वातावरण को भी अपने साहित्य में स्थान देना शुरू किया। इस तरह यात्रा साहित्य ने प्रकृति के सौंदर्यबोध के साथ-साथ सामाजिक आलोचना की भूमिका भी निभाई। जहाँ पहले यात्रावृत्तांतों में लेखक केवल प्राकृतिक दृश्यों का रसास्वादन कराता था, वहीं बाद में वह मानव-जीवन की त्रासदियों, असमानताओं और संघर्षों को भी उजागर करने लगा। इससे यह विधा संवेदना की गहराई और दृष्टिकोण की विविधता से भर उठी। यह परिवर्तन यात्रा साहित्य को अधिक अर्थपूर्ण और यथार्थपरक बना गया। आधुनिक युग के यात्रावृत्तांतो में आत्म-संघर्ष, सामाजिक विद्रूपता और सांस्कृतिक टकरावों का चित्रण एक नई दृष्टि के साथ हुआ। प्रकृति आज भी यात्रा साहित्य की अक्षय सम्पदा है, परन्तु अब यह केवल सौन्दर्य-वर्णन तक सीमित नहीं है। यात्रा साहित्य के माध्यम से यात्रा लेखक अब आधुनिक समाज की सच्चाइयों को उजागर करता है। माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता दो प्रदेश की अलग-अलग लेखिकाएं हैं। माला वर्मा हिंदी भाषा में लिखती है, वही प्रीति सेनगुप्ता गुजराती भाषा में लिखती है। बीसवीं सदी के आखरी दशक से लेकर इक्कीसवीं सदी में वर्तमान तक 'माला वर्मा' और 'प्रीति सेनगुप्ता' निरंतर यात्राएं कर रही है। और इन यात्राओं पर लेखन कार्य अभी भी जारी है। भारत की इन दो घुमक्कड़ लेखिकाओं ने देश-विदेश की जितनी यात्राएँ कीं और जितना यात्रा साहित्य रचा उतना उनके पहले किसी भी साहित्यकार ने नहीं लिखा है।

माला वर्मा हिंदी साहित्य की एकमात्र लेखिका है, जिन्होंने पचास से अधिक देशों की यात्राएं की है, इन पचास मुल्क के दो सौ शहरों का वर्णन माला वर्मा ने अपने यात्रा लेखन में किया है। माला वर्मा की विशेषता यह है कि वे यात्रा को केवल स्थानिक अनुभव के रूप में नहीं देखतीं, बल्कि उसे भीतर की यात्रा से जोड़ती हैं। उनके लिए प्रत्येक स्थल, प्रत्येक रास्ता और हर मुलाक़ात एक आत्मिक संवाद बन जाता है। वह किसी स्थान की भौगोलिक जानकारी देने से अधिक वहाँ की मानवता, स्त्री की अनुभूतियाँ, और सामाजिक संदर्भ को उजागर करती हैं। माला वर्मा के लेखन में इतनी विविधता है, जो हिंदी साहित्य की अन्य यात्रा लेखिकाओं में कम देखने को मिलती। दुनिया के विविध समाज, वहाँ का इतिहास, कला,

संस्कृति, धार्मिक दर्शन, स्थानीय लोगों की मान्यता, प्रकृति चित्रण, स्थापत्य शैली, आदिवासी जनजीवन का इतिहास-चुनौतिया, यात्रा से मानव जीवन पर पड़ने वाला प्रभाव, विदेशी गावों का चित्रण, महिलाओं का जीवन तथा उनकी स्थिति, छोटे बच्चों का वात्सल्य, बुजुर्गों का स्नेह, प्रेम, विभिन्न स्थानों का यथार्थ चित्रण, स्थानीय पात्रो का परिचय, देश-दुनिया के राजनीतिक संबंधों से भोगोलिक क्षेत्र पर पड़ने वाला असर, यात्रा के दौरान हुए खट्टे-मीठे अनुभवों का विवरण, यात्रा के माध्यम से दुनिया में साफ-सफाई का महत्व, दुनिया की परंपराओं को जानने की जिज्ञासा एवं उसका विश्लेषण करने का अद्भुत तरीका, ये सारे विषय माला वर्मा के यात्रा साहित्य में मुख्य रूप से देखने को मिलते है। इसके फलस्वरूप माला वर्मा के यात्रावृत्तांत रोचक लगने लगते है। माला वर्मा अपने यात्रावृतांत की शुरुआत जिस देश में जाती है वहां के इतिहास से करती है। इतिहास बताने का मुख्य कारण यह होता है कि, वर्तमान में उस स्थान की, उस देश की क्या स्थिति है ? इतिहास की घटनाओं से वह देश कोई सीख लेता है या नहीं ? इसका विश्लेषण माला वर्मा करती है। जापान यात्रा के दौरान माला वर्मा बताती है कि जापान ने युद्ध की नीति छोड़ दी है, इससे पता लगता है कि, दुनिया के कई देश ऐसे है जिन्होंने अपने इतिहास से बोध लेकर भविष्य में उसका पालन करने की कसम खायी हैं। जापान ने परमाणु बम हमले की घटना से युद्ध की नीति को पूरी तरह से त्याग कर दिया है। युद्ध के दुष्परिणाम को जापान ने झेला है, और इस घटना से प्रेरणा लेकर जापानियों ने उन्नति के नए मार्ग को अपना लिया है।

माला वर्मा का पर्यावरण से अत्यधिक जुड़ाव है, जब वे किसी नदी, समुद्र या झील को देखती हैं तो उसकी लंबाई से लेकर चौड़ाई, उसका क्षेत्रफल से लेकर एक-एक इंच की जानकारी पाठकों को देती है, इतनी बारीक जानकारी हिंदी के अन्य यात्रा साहित्यकारों के लेखन में देखने को नहीं मिलती है। जहां माला वर्मा 'पेरू' की 'टीटीकाका झील' की लंबाई 193 किलोमीटर चौड़ाई 100 किलोमीटर है ऐसा कहती है। इससे उनके भीतर एक खगोल शास्त्रीय दृष्टिकोण भी नजर आता है। माला वर्मा 'मिस्त्र के पिरामिडों' की स्थापत्य शैली निर्माण व इंजीनियरिंग शैली के बारे में विस्तृत जानकारी देती है, उस समय की यह अद्भुत संरचना है, जो आज इतने वर्षों के बाद भी बिना डगमगाए अपने स्थान पर खड़ी है, यह प्रमाणित करता है कि मनुष्य प्राचीन काल में भी जटिल और उन्नत संरचनाएं बना सकता था।

माला वर्मा 'दक्षिण अफ्रीका' यात्रा के दौरान तत्कालीन समाज में जो बुरी प्रथाएं, मान्यताएं थी, उनको बदलने वाले नायक 'नेल्सन मंडेला' जैसे देश प्रेमी व्यक्ति को भी नहीं भूलती तथा दक्षिण अफ्रीका में भारतीय लोगों के लिए 'गांधी जी' के योगदान का विशेष वर्णन करती है, ऐसा आमतौर पर हिंदी के दूसरे

यात्रा साहित्यकारों की रचना में कम देखने को मिलता है। माला वर्मा 'आर्कटिक' यात्राके दौरान दो देशों के अंतरराष्ट्रीय संबंधों की चर्चा करती है, और कहती है एक भौगोलिक क्षेत्र से कैसे दो देशों के अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर असर पड़ते हैं, प्रस्तुत प्रसंग से ज्ञात होता है माला वर्मा अंतरराष्ट्रीय राजनीति की भी अच्छी जानकार है। माला वर्मा पौराणिक परंपरा का रक्षण करने में मानती है, इसीलिए जापान यात्रा के दौरान वह देखती है कि, जापानियों ने 'पत्र लेखन' की परंपरा को बचा कर रखा है। आज वर्तमान समय कंप्यूटर युग का काल है, ऐसे में भी जापानियों ने अपनी परंपरा को पत्र-चिट्ठी लेखन के माध्यम से बचा कर रखा हुआ है। यह बताता है कि, समाज के एक-एक प्रसंग को माला वर्मा ने बहुत ही ध्यान से और गहराई से देखा है और महसूस किया है और अपने यात्रा साहित्य में उसे स्थान दिया है।

दो देशों की तुलना करना, उसमे एक विदेशी भूमि और दूसरी भारतीय भूमि में तुलना करना माला वर्मा के यात्रा साहित्य में अधिक देखने को मिलता है, तभी माला जी ब्राजील के शांत, सुंदर परिवेश को देखकर उसकी तुलना भारत से करती है। माला जी ब्राजील के उन तटीय घरों का वर्णन करती हैं जिनके सामने बगीचे हैं, नारंगी के फल लगे पेड़ हैं और हर घर के सामने एक निजी जेट्टी है, जहाँ से लोग अपनी छोटी नौकाओं द्वारा शांति से आवागमन कर सकते हैं। इन दृश्यों से लेखिका को यह प्रतीत होता है कि, वहाँ का जीवन न केवल सुंदर, बल्कि व्यवस्थित, शांत और तनावमुक्त है। वहाँ कोई शोरगुल, सामाजिक संघर्ष या जातीय विद्वेष नहीं है और यही माला वर्मा को सबसे ज्यादा आकर्षित करता है। इसके विपरीत, भारत की वर्तमान सामाजिक परिस्थिति पर लेखिका गहरी चिंता और निराशा प्रकट करती हैं। वह कहती हैं कि, भारत में हम चाँद पर पहुँचने की बात कर रहे हैं, परंतु ज़मीन पर हर दिन मानवता शर्मसार हो रही है। इससे लेखिका का यह भाव स्पष्ट होता है कि, तकनीकी और वैज्ञानिक प्रगति के साथ-साथ अगर मानवीय मूल्यों, सामाजिक एकता और शांति पर ध्यान न दिया जाए, तो वह प्रगति अधूरी और खोखली बन जाती है। माला वर्मा तार्किक उदाहरण द्वारा दो देशों की तुलना करती है। ये उनके यात्रा का प्रमुख पक्ष है।

अर्जेंटीना यात्रा के दौरान माला वर्मा 'अरु' आदिवासी जनजाति के परंपरागत शिकार पद्धति का वर्णन करती है, माला जी लिखती है- अरु आदिवासी जनजाति के लोग शिकार के लिए 'कार्मो रेट्स' जैसे चिड़िया को पालते हैं, उनके पैरों में धागे बांध दिए जाते हैं, ताकि ये मालिक के कंट्रोल में रहे। यह पक्षी पानी में डुबकी लगाकर मछली पकड़ लाते हैं। 'ईबिस' पक्षी को भी ये आदिवासी लोग पालते हैं, इनके साथ 'अरु लोग' शिकार के परंपरागत तरीकों का उपयोग करके, अपना जीवन निर्वाह करते हैं उनका

वर्णन भी माला जी यहाँ बारीकी से प्रस्तुत करती है। हिंदी यात्रा साहित्य की अन्य लेखिकाओं के लेखन में इस तरीके का सटीक और भिन्नतापूर्ण अनुभव चित्रण मेरी नजर में अब तक नहीं आया है।

माला वर्मा को लोक नृत्य में अधिक रुचि है, इसलिए उनके यात्राओं में ब्राजील का 'सांबा डांस', 'बालरूम सांबा डांस', अर्जेंटीना का 'टैंगो नृत्य', कंबोडिया में 'अप्सरा नृत्य' का वर्णन देखने को मिलता है। नृत्यों की इतनी विविधता हिंदी की अन्य यात्रा लेखिकाओं के साहित्य में नहीं देखने को मिलती है।

माला वर्मा कंबोडिया यात्रा के दौरान धार्मिक कुरीतियों, पाखंड का खुलकर विरोध करती है। वहां के स्थानीय लोगों द्वारा भगवान बुद्ध की प्रतिमा पर फूल-हार चढ़ाए जाने के प्रसंग को माला वर्मा बुद्ध के नियमों का उल्लंघन करना कहती है।

माला वर्मा ब्राजील की व्यवस्था, पब्लिक टॉयलेट का वर्णन, एयरपोर्ट की स्थिति और साफ सफाई की तुलना भारत से करती है। लेखिका यात्राओं के दौरान विदेशों की व्यवस्था, सरकार के कार्य, लोगों के स्वभाव तथा जिम्मेदारियों को गंभीरता से देखती है, तब उससे भारत के लोगों की तुलना करती है, यहां के भ्रष्ट शासन का खुलकर विरोध अपने लेखन में माला वर्मा करती है। ऐसा विशिष्ट लेखन हमें इतर यात्रा साहित्यकारों के लेखन में कम देखने को मिलता है।

हम जब यात्रा साहित्य में कलात्मकता की बात करते हैं, तब माला वर्मा 'क्राइस्ट द रेडिमर' की मूर्ति का वर्णन, उनकी लंबाई, उनकी चौड़ाई, उनके निर्माण कार्य में लगाए गए पत्थरों का वर्णन पूरी सत्यता और खरेपन एवं तथ्यों के साथ करती है, जिससे उनके कलात्मकता में रुचि एवं कलात्मक निर्माण की शैली से लगाव का पता चलता है।

यात्रा के दरमियान वहां के स्थानीय पात्रों के साथ माला वर्मा का सहज भाव उन्हे लोगों के जीवन के करीब ले जाता है, इन पात्रों के साथ उनका लगाव बढ़ने से परिवार जैसे संबंध विकसित होते है। इसीलिए जापान की 'गीशा' नामक पात्र का वर्णन माला जी अत्यंत भावुकता से करती है। यहाँ भावुक होना से उनके व्यक्तित्व की एक ओर झलक हमे मिलती है। यात्रा के दौरान जिस तरह के अनुभव माला वर्मा को होते हैं, उनकी प्रतिक्रिया एवं हाव-भाव भी उसके अनुसार देखने को मिलती है।

हिंदी साहित्य के लगभग एक हजार वर्षों की लंबी परंपरा में माला वर्मा जैसी कोई दूसरी लेखिका दिखाई नहीं देती, जिनके लेखन में इतनी विविधता हो। हिंदी साहित्य के एक हजार वर्षों के इतिहास में इतने देशों की यात्राएं पहले किसी लेखिका ने नहीं की। माला वर्मा हिंदी साहित्य की एकमात्र लेखिका है, जिन्होंने पचास से अधिक देशों की यात्राएं की और अनेक देश ऐसे भी है, जिनकी यात्राएं कई-कई बार की है, माला वर्मा ने हिंदी यात्रा साहित्य विधा को समृद्ध करने का अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य किया है। इनका लेखन आने वाले समय में साहित्य प्रेमी और यात्रा प्रेमी दोनों के लिए अत्यधिक उपयोगी साबित होगा।

गुजराती साहित्य के पांच सौ वर्षों के इतिहास में अगर हम ढूंढने जाएंगे तो प्रीति सेनगुप्ता एक मात्र ऐसी लेखिका है, जो आदतन लिखते जा रही है, जिनके रोम-रोम में यात्रा साहित्य विधा बस्ती है। प्रीति सेनगुप्ता ऐसी समृद्ध लेखिका है जो इस देश के यात्रा साहित्यकारों से भी कुछ मायने में बहुत आगे निकल गई है। हमने आलोच्य लेखिका प्रीति सेनगुप्ता के यात्रा साहित्य पर कार्य करते हुए अपने खोज में पाया कि प्रीति सेनगुप्ता का यात्रा लेखन विविधतापूर्ण अनुभवो से भरा पड़ा है। प्रीति जी की यात्रा पर 23 रचनाएं मिलती है, इन 23 रचनाओं में 116 देशों की बात की गई है, इन 116 देशों के 250 शहरों का वर्णन, इन 250 शहरों की भिन्न-भिन्न संस्कृति और भाषा, और उस पर लिखना यह बहुत बड़ा कार्य है, जो प्रीति सेनगुप्ता ने किया है।

प्रीति सेनगुप्ता इजिप्त देश की यात्रा के दौरान पिरामिडों को देखकर चिंता व्यक्त करती है। वो कहती है वर्तमान युवा पीढ़ी को इन पिरामिडों का महत्व समझकर इनका संरक्षण करना चाहिए , लेकिन आज की युवा पीढ़ी उसका संरक्षण तो दूर उसपर जाकर बैठ जाते है, उसको सटाकर गाड़िया पार्क करते है जिससे उसके स्थापत्य को नुकसान हो रहा है, इन सब द्रश्यों को देखकर प्रीति जी को दुख होता है। इस तरह का सटीक वर्णन अन्य यात्रा साहित्यकारों के लेखन में कम देखने को मिलता है। जहां वह किसी इमारत की स्थापत्य की स्थिति को देखकर चिंतित हो।

प्रीति सेनगुप्ता चीन देश की यात्रा के दौरान ऐतिहासिक चीन की दीवार को देखती है एवं उसके पीछे का ऐतिहासिक महत्व का वर्णन करके पाठकों को उसके निर्माण से लेकर इतिहास से अवगत करती है। प्रीति जी बताती है कि, चीन की दीवार की लंबाई 3600 माईल हैं, दीवाल की ऊंचाई 12 से 15 फीट है। दीवार की सबसे बड़ी खासियत है की, उस पर एक साथ पांच घोड़े दौड़ सकते हैं। प्रीति सेनगुप्ता चीन के दीवार के इतिहास को अत्यंत सटीक विस्तारपूर्वक ढंग से प्रस्तुत करती है इससे उनके इतिहास के प्रति रुचि का

भी पता चलता है। इस तरीके की विशेषताएं अन्य यात्रा साहित्यकारों के लेखन में हमे देखने को कम मिलती है।

प्रीति सेनगुप्ता हांगकांग के 'अेबरडीन' नामक स्थान का अत्यंत मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करती है, वहां के स्थानीय लोगों को जीवन निर्वाह के लिए अनेक मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। प्रीति जी बताती है, अेबरडीन में पानी पर तैरता एक पूरा गांव है। कोई गांव पानी पर कैसे तैर सकता है सुनकर ही आश्चर्य होता है, लेकिन यह हकीकत है, यह सच्चाई हांगकांग के अेबरडीन की है। जहां लोग नाव पर अपना जीवन जीते हैं, उनके पास कोई घर, कोई जगह नहीं है, उनका घर तो केवल वह नाव है। इस नाव पर उनका जन्म होता है, इस पर जीते हैं, खाते हैं, पीते हैं और अंत में मर जाते हैं। शादी-ब्याह सब इसी पर होता है, यह विश्व के रोचक स्थानों में से एक है, यहां की प्रथाओं का वर्णन प्रीति सेनगुप्ता ने अत्यंत बारीकी से किया है।

प्रीति सेनगुप्ता अमेरिकी समाज का वर्णन करते हुए कहती है, अमेरिकी समाज मुक्त विचारधारा का है वहां स्त्रियों को कोई रोक-टोक नहीं है, जहां व्यक्ति को स्वतंत्रता मिलती है, वहां व्यक्ति खुलकर कार्य कर सकता है। ऐसा करने से व्यक्ति भय-मुक्त, निर्भय होता है, जिससे उसका स्वयं का विकास होता है। स्वतंत्र वातावरण मिलने से व्यक्ति के आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। ऐसा प्रीति जी अपने अमेरिकी यात्रा के दौरान बताती है, और यही कारण है की प्रीति जी स्वयं भी अमेरिका की नागरिकता लेकर वहां पर स्थाई रूप से बस गई है। इससे ज्ञात होता है की, उन्हें अमेरिकी समाज और वातावरण पसंद आ गया है।

प्रीति सेनगुप्ता 'आर्कटिक' की एक जनजाति 'इनुइत' के बारे में बताती है जिसका संपूर्ण जीवन शिकार पर आश्रित है, आर्कटिक पर जीवन जीना अपने आप में एक संघर्ष ही है, और वहां पर यह इनुइत जनजाति पर्यावरणीय कठिनाइयों का सामना करते हुए जीवन यापन कर रही है। इनुइत जनजाति का विशेष वर्णन करके लेखिका यह बताना चाहती है कि, अनुकूल परिस्थिति में रहने वाले समाज को व्यक्ति को प्राप्त सुविधाओं का केवल आनंद नहीं लेना चाहिए परंतु उसका मूल्य भी समझना चाहिए। एक और जीवन की विषम परिस्थितियों में यह इनुइत जनजाति के लोग संघर्ष करते हुए जीवन निर्वाह करते हैं ऐसे में लेखिका दुनिया भर के उन सभी लोगों को, जिन्हें आसानी से संसाधन उपलब्ध हो जाते हैं उन्हें बताना चाहती है कि इन संसाधनों का उपयोग अंधाधुंद न करके विवेक के साथ करें।

प्रीति सेनगुप्ता 'मलेशिया' यात्रा के दौरान मलेशिया में मानव अधिकार एवं मानवीय व्यवहार का चित्रण बहुत ही बारीकी से करती है। मलेशिया में उंगली दिखाकर बात करना ठीक नहीं समझा जाता है, यह असभ्यता की श्रेणी में गिना जाता है। किसी भी वस्तु को उंगली दिखाकर इशारा करना वहां बुरा समझा जाता है। इस तरह की विचित्र परंपराओं का वर्णन भी प्रीति जी अपने यात्राओं में करती है।

प्रीति सेनगुप्ता को कला के प्रति खूब श्रद्धा है, इसीलिए जिस किसी देश में जाती है वहां के संगीत, वहां के वाद्य-यंत्रों को जानना समझना एवं देखना चाहती है और इस कड़ी में प्रीति जी 'जमैका' के संगीत का वर्णन करती है, उसमें 'लिंबो', 'कैलिप्सो' और 'रेगे' संगीत की शैलीयां है, जो केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं है, परंतु उसमें वहां के लोगों के इतिहास व संस्कृति का वर्णन देखने को मिलता है।

प्रीति सेनगुप्ता मिस्त्र यात्रा के दौरान स्थानीय लोगों के साथ संगीत कार्यक्रम में शामिल होती है। उन लोगों के संगीत सुर में ताल देती है। प्रस्तुत प्रसंग से ज्ञात होता है, यायावरों के लिए समग्र विश्व एक परिवार है। कला की संगीत की कोई सीमा नहीं होती, जहां व्यक्ति को उसकी मनपसंद चीज-वस्तु दिखती है वह उसमें शामिल हो जाता है। संगीत की रुचि के कारण प्रीति जी यहां सुर-ताल देने लगती है। यह प्रसंग देश की सीमाओं को पास में लाने का कार्य करता हुआ प्रतीत होता है। इस दौरान लेखिका के आंखों में आंसू आ जाते हैं यह घटना अत्यंत मार्मिक है क्योंकि विदेश में होने के बावजूद उन्हें भारत में होने का एहसास होता है। यह अनुभव अत्यंत हृदयस्पर्शी था। जो प्रीति सेनगुप्ता की यात्राओं में विशेष स्थान रखता है।

चित्रकला में भी प्रीति सेनगुप्ता को बहुत रूचि है और इसीलिए वे जापान कोरिया एवं चीन यात्रा के दौरान 'ब्रश पेंटिंग' का वर्णन बहुत ही सूक्ष्मता से करती है। तथा 'क्योयाकी' और 'कियोमिज़ु-याकि' मिट्टी के बर्तन बनाने की शैली है, जो जापान में पायी जाती है, उसका वर्णन करना लेखिका नहीं भूलती है। प्रीति जी के स्वभाव में नई वस्तु की विशेषता, नई परंपरा को जानना समझना उसका सूक्ष्मता से अध्ययन करना निहित है। यही कारण है कि दुनिया भर के देशों की अनेक विशेष वस्तुओं, तथा परंपराओं का वर्णन प्रीति सेनगुप्ता के यात्रा साहित्य में देखने को मिलता है।

प्रीति सेनगुप्ता के यात्रा की सबसे बड़ी विशेषता है, उनके यात्रा में स्थानीय लोगों और पात्रों का वर्णन। अपनी यात्राओं के द्वारा प्रीति जी सुखद व दुखद अनुभव का वर्णन करना कभी नहीं भूलती। मोरक्को में अब्दुल नाम के स्थानीय पात्र द्वारा उन्हें ठगना, बेवकूफ बनाना सौ (100) दिरहाम लेकर फरार हो जाना। एक दुखद अनुभव था। वही 'अझीझ' नामक दूसरा पात्र प्रीति से बस में मिलता है,और वह प्रीति जी को

उसके घर चलने का आग्रह करता है। प्रीति जी उसके आमंत्रण को स्वीकार करती है। अझीझ एवं उसके परिवार द्वारा लेखिका को आमंत्रण देना, अझीझ के घर के सभी सदस्यों द्वारा अत्यंत स्नेह मिलना अकल्पनीय था। तो यहां यात्राओं में सुखद एवं दुखद अनुभव कभी भी कहीं भी हो सकते हैं आपकी कल्पना के परे हो सकते हैं, यही प्रीति जी अपने यात्राओं के माध्यम से बताना चाहती है। प्रीति जी मोरक्को की 'अतिथि प्रथा' का वर्णन इस तरह करती है, जहां अतिथि को वहां का स्थानीय व्यक्ति समझा जाता है, और स्थानीय व्यक्ति अपने आप को अतिथि समझते हैं। यह प्रथा एक दूसरे पर विश्वास, प्रेम, और स्नेह का भाव दर्शाती है। प्रीति सेनगुप्ता मोरक्को की इस प्रथा के माध्यम से दुनिया के कोने कोने की परंपराओं से पाठकों को रूबरू कराती है। यह उनके यात्रा लेखन की सबसे बड़ी विशेषता है।

प्रीति सेनगुप्ता राजनीति की अच्छी जानकार भी है। यह दक्षिण कोरिया और उत्तर कोरिया के इस प्रसंग से सिद्ध होता है, प्रीति जी कहती है- प्राकृतिक आपदा आने पर आपसी मतभेद भुलाकर एक देश, दूसरे देश की मदद के लिए आगे आता है। वही ऑस्ट्रेलिया यात्रा के दौरान प्रीति जी ऑस्ट्रेलिया के ध्वज में 'यूनियन जैक' का चिन्ह के पीछे ऐतिहासिक कारण की पड़ताल करती है। ऑस्ट्रेलिया प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध में इंग्लैंड के साथ समूह में रहकर लड़ा था। इस तरह के प्रसंग का वर्णन अपनी यात्राओं में करना यह साबित करता है कि, प्रीति सेनगुप्ता इतिहास के साथ-साथ दुनिया की राजनीतिक सबंधों की भी उत्तम समझ रखती है। उनकी दृष्टि व्यापक है। प्रीति सेनगुप्ता के लेखन की सबसे बड़ी विशिष्टता है की, कभी वह दक्षिण अमेरिका की जनजाति पर लिख रही है, कभी वह पेरिस के पढ़े लिखे लोगों के स्वभाव पर लिख रही है, कभी वह स्थापत्य शैली की सुंदरता का वर्णन करती है। इतनी विविधता आज तक किसी यात्रा साहित्यकारों के यात्रा लेखन में देखने को नहीं मिलती।

हमने फ्रांस के बारे में बहुत कुछ पढ़ा, फ्रांस के इन गांव की स्त्रियों की बात कोई नहीं करता, जो प्रीति सेनगुप्ता करती है। हम जब यात्रा साहित्य पढ़ते हैं तब अक्सर ऐसा देखा जाता है कि, किसी लेखक ने यात्रा साहित्य के बारे में कुछ लिखा हो, या एक रचना हो तो ऐसा दिखेगा की उसकी पेरिस यात्रा केवल पेरिस शहर के वर्णन पर आधारित होगी। उसमे पूरे फ्रांस का चित्रण न होकर केवल केवल पेरिस यात्रा वर्णन होगा, लंदन यात्रा पर कोई यात्रावृत्तांत होगा तो उसमे पूरे इंग्लैंड का नहीं अपितु सिर्फ लंदन शहर का वर्णन होता है। अक्सर यात्रा साहित्य में ऐसी पुस्तक हमारे सामने आई है, मगर किसी देश का कोना-कोना छानना और इतनी विविधता की उसमे जापान भी मिल रहा है, चीन भी मिल रहा है, कभी-कभी ऐसा भी होता है कि चीन में एक देश थोड़ी बसता है, जैसे भारत में एक देश नहीं बसता है, भारत तो

अपने आप में विविधता से भरा पड़ा है। जो पूर्वोत्तर में है, वह दक्षिण में नहीं है। जो दक्षिण में है, वह उत्तर में नहीं है। तो यहां भी कोई विदेशी यात्री आता है, उसे तो यह विचित्र संसार लगता है। इसी तरह प्रीति सेनगुप्ता ने दुनिया के कोनों-कोनों की यात्राएं की है, मगर इसके बावजूद उन्होंने सभी के समाज, धर्म, संगीत की, स्थापत्य शैली की, कलात्मकता को परखा है, पढ़ा है। साथ ही संसार की विविध परंपराएं, स्थानीय लोग, स्थानीय जीवन की विशेषताएं, इतिहास बोध, पात्रों का सटीक चित्रण, भिन्न-भिन्न संस्कृतियों का विश्लेषण आदि अनेक विविध पहलू उनकी यात्राओं में स्पष्ट रूप से देखने को मिलता हैं। यह उनकी यात्रा साहित्य की विविधता है।

आलोच्य लेखिका के साहित्य मे साम्यता एवं विषमता:

आलोच्य लेखिकाओं ने यात्रा के दौरान आवागमन का ऐसा कोई साधन नहीं है, जिसका उपयोग नहीं किया हो। इन्होंने सुबह चार (4:00) बजे यात्राएं की, रात बारह (12:00) बजे यात्राएं की, दो (2:00) बजे यात्राएं की हवाई जहाज से यात्रा की, ट्रेन से यात्रा की बस से यात्रा की, बैलगाड़ी से यात्रा की, घोड़े पर बैठकर यात्रा की, खच्चर पर बैठकर यात्रा की, टट्टू पर बैठकर यात्रा की, पैदल चलकर यात्रा की, यह उस रूप में संपूर्ण यात्री है जो आधुनिक सुख-सुविधा, मौसम, समय, आवागमन की चिंता किए बिना बस घर से निकल पड़ते हैं। व्यक्ति को अपने घर में आने-जाने के लिए कोई नियोजन या सुख सुविधा के बारे में सोचना विचारना नहीं पड़ता है और इस विचार से माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता समग्र दुनिया को ही अपना घर मानती है। वह बिना किसी चिंता के संसार को अपना घर-परिवार मानकर निश्चिंत होकर यात्राएं करती है। यह वह साहसिक यात्री है, जिसने बस खराब हुई तो पैदल चलकर यात्रा की, कई बार नाव से यात्रा की,अंटार्कटिका यात्रा के समय प्रीति जी को मौत से साक्षात दर्शन हुए। बावजूद इसके यह घटना उन्हें यात्रा करने से रोक नहीं पाती है,और इस घटना के बाद उनका साहस और सुदृढ़ होता है, और वह पृथ्वी के उत्तरी छोर (उत्तर ध्रुव) पर जाने का मन बनाती है। यह उनके व्यक्तित्व की झलक है। जहां इन घटनाओं से वह पीछे हटने वाली स्त्री नहीं है। यहाँ उनके स्वभाव में साहस एवं निडरता का प्रमाण मिलता है। इन्ही कारणों के वजह से उनके अनुभव इतने गाढ़ हुए, प्रगाढ़ हुए। यही प्रमाण है की आलोच्य लेखिकाओं ने दूसरे साहित्यकारों से अलग लिखा। क्योंकि उनके अनुभव में ही इतनी सारी विविधता है। माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता की यात्रापरक कृतियों में विभिन्न देशों की भिन्न-भिन्न परिस्थितियों का उल्लेख है। ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, एवं धार्मिक, परिस्थितियों के अंकन में उनकी विशेष रुचि है। जो उनके यात्रा साहित्य को विश्व पटल पर एक अलग पहचान दिलाता है।

माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता ने देश-विदेश की अनेक बार यात्राएँ कीं और उसके आधार पर चौबीस से अधिक यात्रापरक कृतियों की रचना की है। प्रीति सेनगुप्ता की राय में 'उतरोत्तर' एवं माला वर्मा की राय में 'आर्कटिक ध्रुवीय भालू का देश' इन कृतियों में सर्वोत्तम है, यह सबसे साहसिक और सनसनीखेज यात्रा थी। दुनिया के सातों महाद्वीप की यात्रा कर लेने के बाद उन्हें ऐसा महसूस होता है की अभी भी कुछ छूट रहा है। ऐसे में दोनों लेखिका माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता दोनों उत्तर ध्रुव की यात्रा करती है। उत्तर ध्रुव एवं दक्षिण ध्रुव (अंटार्कटिका) पृथ्वी के दोनों छोर की यात्रा करके अपने आप को परिपूर्ण मानती है।

माला जी और प्रीति जी जहाँ भी जाते है, उनका सम्पर्क उन प्रदेशों के समाज, व्यक्तियों एवं उनकी स्थिति, रीति-रिवाज़, खान-पान, वेश-भूषा आदि से रहता है। उन्होंने समाज के इन समस्त स्वरूपों एवं मार्मिक घटनाओं को अपनी कृतियों में अभिव्यक्त किया है। उनका यात्रा साहित्य विश्व संस्कृति का सुन्दर दर्पण है। भारतीय यात्राओं से सम्बन्धित कृतियों में 'सिक्किम यात्रा' 'राजस्थान–गुजरात की यात्रा' वहां के व्यापकता का रोचक ढंग से प्रस्तुतीकरण करके देश को संस्कृति के आधार पर एकता के सूत्र में बाँधने का प्रयास माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता के लेखन में देखने को मिलता है।

"माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता के यात्रा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन" करने के उपरांत कहना उचित होगा की, माला वर्मा का हिंदी यात्रा-साहित्य में और प्रीति सेनगुप्ता का गुजराती यात्रा-साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने अपने यात्रा-वर्णन में स्वदेशी-विदेशी समाज, संस्कृति, और स्थानीय जीवन के रीति-रिवाज, अचार-विचार, रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा, त्यौहार, पर्व, प्रत्यक्ष अनुभव, उद्देश्य के साथ-साथ प्रकृति सौंदर्य, मानवीय संवेदना तथा नैतिक आदर्शों को पूरी सक्षमता के साथ रेखांकित किया है।

आलोच्य लेखिकाओं ने इन विदेशी यात्रा के अंतर्गत प्रत्यक्ष रूप से जिस तरह का समाज देखा उसमें प्रायः एक ओर युवा पीढ़ी की भोगवादी मानसिकता, सेक्स का खुलापन, बाजारूपन, आकर्षण, ऊबाऊपन, निरसता, बूढ़ों के प्रति युवा पीढ़ी का हीन व्यवहार, लोगों का व्यवहार, दांपत्य संबंधों में होनेवाला तान-तनाव, बौखलापन, अकेलापन, उदासीनता, अमानवीयता, लोगों की खत्म होती आत्मीयता, असभ्यता, पागलपन, जैसे नकारात्मक प्रभाव देखने को मिले। वहीं समाज के अनेक सकारात्मक स्वरूप भी देखने को मिले जिसमें शादी-ब्याह के सरल रीति-रिवाज, पौराणिक वेशभूषा, समाज व्यवस्था, अनुशासन-पालन, स्थानीय लोगों का स्नेह, करुणा, प्रेम तथा आधुनिकता आदि बातों का चित्रण प्रधानता से परिलक्षित होता है। तो दूसरी ओर मासूम बच्चों का चित्रण, साहित्य तथा

साहित्यकारों का सम्मान, नारी की आत्मनिर्भर बनने की चाहत, प्रेभ-भावना, सहानुभूति और सभ्यता का चित्रण आलोच्य लेखिकाओं के यात्रा साहित्य में दिखाई देता है।

"माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता के यात्रा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन" विषय के आधार पर प्राप्त उपलबद्धियां इस प्रकार है।

आलोच्य लेखिकाओं के साहित्य में साम्यता :

माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता दोनों जीवित है, निरंतर यात्राओं के द्वारा वह यात्रा साहित्य को समृद्ध करने का कार्य कर रही है। यहाँ उनके यात्रा साहित्य में मिलने वाले समानता का विवरण प्रस्तुत किया गया है, वह इस तरह है-

1. माला वर्मा बिहार की पृष्ठभूमि से आती है, वहीं प्रीति सेनगुप्ता गुजरात की पृष्ठभूमि से है, दोनों के सूत्र बंगाल से जुड़ते है। उनके लेखन में बंगाल की संस्कृति का प्रभाव देखने को मिलता है। कला के रसिक एवं लेखन की प्रवृत्ति वाले लोग बंगाल में अधिक है। बंगाल में कहा जाता है कि, जो पढ़ते है, वह लिखते है। दोनों लेखिका के पति डॉक्टर है। वर्तमान में दोनों ही यात्रा कर रही है, लिख रही है।
2. दोनों लेखिका धर्म को भगवान को धार्मिक आडंबर को नहीं मानती है। बल्कि वह प्रकृति में मानते है, जैसे प्रीति सेनगुप्ता का पुष्प उठाकर सर पर लगाना, माला वर्मा द्वारा जिस किसी देश में जाती है वहां की नदी से जल लाकर अपने घर में उसका संग्रह करना, यह दर्शाता है की, प्रकृति से उनका अधिक जुड़ाव है, प्रकृति में ज्यादा विश्वास है। यह प्रकृति में उनकी आस्था का चित्रण है।
3. माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता के एक यात्रा संग्रह में कई देशों की यात्राओं का वर्णन है। माला जी का यात्रा संग्रह 'आइये मलेशिया, सिंगापूर, थाईलैंड चलें' शीर्षक से ही ज्ञात होता है की, इस यात्रा संग्रह में तीन देशों के यात्रा अनुभव है, वहीं 'साउथ अमेरिका' यात्रा संग्रह में ब्राजील,अर्जेन्टीना,पेरू देश के यात्रा अनुभव है। समान प्रीति जी का यात्रा संग्रह 'दिक्दिंगत' में अमेरीका, फिलीपींस, फ्रांस, थाईलैंड, स्पेन, मोरक्को, इंडोनेशिया, जमैका जैसे देशों के यात्रा

अनुभव देखने को मिलते है। वहीं 'सूरज संगे' में ब्राजील, चिली, बोलिविया, मेक्सिको जैसे देशों के यात्रा अनुभव है।

4. माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता के यात्रावृत्तांत में जनसमुदाय के आचरण की पवित्रता, मानव संवेदना, सहिष्णुता, नैतिक मनोबल, अनुशासनबद्धता, न्यायप्रियता, क्षमाशीलता, भावात्मकता, मानवीयता, आत्मीयता, प्रेम-भावना, उपदेशात्मकता, सहानुभूति, आत्मनिर्भरता, सम्मान, स्नेह, विश्वास, संस्कार और विश्वसनीयता आदि तत्त्व विद्यमान हैं जिसके कारण मनुष्य में 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना विकसित होती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन की यह महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।
5. आलोच्य लेखिकाओं के यात्रा-वर्णन की स्थान-विशेषता, ऐतिहासिकता, कलात्मकता, परिवेश, पात्रों का चरित्र, आदि विशेषताएँ हर संवेदनशील पाठक को यात्रा करने के लिए प्रेरित करता है, और दिशानिर्देश भी देता है। जीवन में यात्रा करते समय यात्राओं का यह अनुभव निश्चय ही आनंदमयी सिद्ध होगा। प्रस्तुत शोध-प्रबंध की यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।
6. वर्तमान समाज की उदासीनता, अनाकर्षण, धर्म का कठमुल्लापन, पारिवारिक तान-तनाव, सेक्स का बाजारूपन, खुलापन, घिनौनापन, अमानवीयता, भोगवाद, पारंपरिक जकड़न, अराजकता, बालविवाह, अंधश्रद्धा जैसी नकारात्मक प्रवृत्तियों को सकारात्मक बनाने के लिए विवेच्य यात्रासाहित्य का अध्ययन महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा।
7. आलोच्य लेखिकाओं के यात्रा-साहित्य में वर्णित सूक्ष्म निरीक्षण एवं परीक्षण तथा वृत्तांतों का प्रस्तुतीकरण पढ़कर पाठकों को विदेशी समाज, संस्कृति, लोक जीवन को जानने-पहचानने के साथ-साथ यात्रा करने की इच्छा जागृत होगी, तब ये यात्रा-वर्णन अपनी यात्रा को सफल बनाने के लिए या अपने अनुभव जगत् को समृद्ध बनाने की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण साबित होगा।
8. माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता के यात्रावृत्तांत अनुभव जगत् की गहराई, और जीवन में यात्रा का स्थान प्रस्तुत करते है। जिसका परिचय संवेदनशील पाठक को होता है। प्रस्तुत शोध-विषय की यह प्रधान उपलब्धि है।
9. आलोच्य लेखिकाओं के 'दक्षिण अमेरिका' यात्रा का उद्देश्य एक समान है। वह अपरिचित आदिवासी जनजातियों का परिचय प्राप्त करना चाहती है। और पाठकों को उनसे अवगत कराना चाहती है। इस तरह माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता के यात्रा साहित्य में अनेक समान विषय-वस्तु का चित्रण देखने को मिलता है।

आलोच्य लेखिकाओं के साहित्य में विषमता :

1. माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता के यात्रा करने के तरीके में बहुत बड़ा अंतर है। प्रीति सेनगुप्ता अकेले यात्रा करती है। इसके विपरीत माला वर्मा एक 'ट्रैवल एजेंसी' के साथ समूह में यात्रा करती है।
2. प्रीति सेनगुप्ता के यात्रावृत्तांत के 'शीर्षक' से किसी देश या स्थान की जानकारी सीधे रूप में नहीं मिलती लेकिन उस स्थान, परिवेश की विशेषता, उनकी रचना का शीर्षक बनकर सामने आता है। जैसे 'दक्षिण पंथे', उतरोत्तर इस से यात्रा स्थल की दिशाओं के बारे में पता चलता है। 'मन तो चंपानुं फूल' में दक्षिण ऐशिया के विविध स्थानों पर पाए जाने वाले पुष्पों का चित्रण है। इसके विपरीत माला वर्मा के यात्रावृत्तांत के शीर्षक से तुरंत ज्ञात होता है कि, यात्रा रचना किस देश की है। माला वर्मा जिस किसी देश में जाती है, उस देश के नाम से पुस्तक को शीर्षक देती है जैसे- 'टर्की यात्रा संस्मरण', 'जापान यात्रा-वृत्तांत'।
3. हमने अपने खोज में पाया कि,माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता के ऐतिहासिक स्थलों को देखने की दृष्टि में बड़ा अंतर है, 'मिस्र' (इजिप्त) यात्रा के दौरान माला वर्मा पिरामिडों के स्थापत्य शैली से इसके इंजीनियरिंग निर्माण कार्य से प्रभावित होती है, वहीं दूसरी ओर प्रीति जी इसकी जर्जरित हालत देखकर चिंतित होती है, वह आज की युवा पीढ़ी से इसके महत्व व संरक्षण की ख्वाहिश रखती है।

इस तरह प्रस्तुत शोध प्रबंध के माध्यम से माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता के यात्रा साहित्य में साम्यता तथा विषमता दोनों देखने को मिलता है, एक ओर आलोच्य लेखिकाओं के यात्रा वर्णन में समाज के बारीक पक्षों का समान वर्णन है, तो दूसरी ओर स्थानीय लोगों के साथ में भिन्न-भिन्न अनुभव है। दोनों के यात्रा करने के तरीके में विषमता साफ नजर आती है।

स्त्रियों को समाज मे कम स्वतंत्रता मिलती है। माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता के असंख्य यात्रा से यह प्रतीत होता है की, अब आने वाला समय तरुणियों के लिए यात्रा के नए अवसर लेकर आएगा। ऐसा होने पर इसका सम्पूर्ण श्रेय माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता को दिया जायेगा। कहना उचित होगा की, माला जी और प्रीति जी ने यात्रा के द्वारा भविष्य में आने वाली तरुनियों के लिए मार्ग प्रशस्त करने की परंपरा का आरंभ किया है।

अध्ययन की नई दिशाएँ-

माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता के यात्रा-साहित्य पर निम्नांकित विषयों को लेकर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है-

1. माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता के यात्रा-साहित्य में चित्रित समाज-जीवन।
2. माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता के यात्रा-साहित्य में प्रस्तुत विदेशी लोक-संस्कृति का अध्ययन
3. माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता के यात्रा साहित्य निरूपित विविध आयामों का तुलनात्मक अध्ययन।

वस्तुतः प्रत्येक शोध-विषय की अपनी-अपनी सीमा होती है। प्रस्तुत शोध कार्य भी अपनी सीमा में रहकर संपन्न हुआ है। आने वाले शोधार्थी उपर्युक्त विषयों पर स्वतंत्र रूप से शोध-कार्य कर सकते है।